

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 9, जॉन 7

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 9 है, जेरूसलम में तनावपूर्ण समय, यह आदमी कौन है? यूहन्ना 7:1-52.

नमस्ते, मैं डेविड टर्नर हूँ। जॉन अध्याय सात पर हमारे व्याख्यान में आपका स्वागत है। हमने गलील में यीशु को यूहन्ना छह में छोड़ दिया था और वह भीड़ के साथ और अपने ही कुछ शिष्यों के साथ बहस कर रहे थे जो उनकी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं कर रहे थे और यहां तक कि बारहों को बुला रहे थे और उनसे पूछ रहे थे कि भीड़ को खिलाने और चर्चा में शामिल होने के बाद उनकी प्रतिबद्धता क्या थी कैसे परमेश्वर अपने लोगों का भरण-पोषण करता है, चाहे रोटी के द्वारा या परमेश्वर के वचन, यीशु के द्वारा।

और इसलिए, यीशु विश्वास और उसके बीच बड़ी सादृश्यता बनाते हैं, इसकी तुलना बहुत सीधे तरीके से, एक ग्राफिक तरीके से, उसके मांस को खाने और उसके खून पीने से करते हैं, जिससे कई लोग उसका अनुसरण करना बंद कर देते हैं। इसलिए, अध्याय एक पूर्वाभास वाले नोट पर समाप्त होता है जहां पीटर पुष्टि करता है कि वह, प्रेरितों के साथ, यीशु के साथ रहेगा क्योंकि उसके पास जीवन के शब्द हैं। फिर भी, यीशु बताते हैं कि यहूदा, बारह में से एक, वास्तव में भेष में शैतान है और इसलिए शिष्यों के बीच चीजें उतनी खुश नहीं हैं जितनी हम सोचना चाहते हैं।

बेशक, यह अध्याय 13 में सामने आता है जहां यहूदा यीशु को धोखा देने के लिए प्रस्थान करता है और अंततः अध्याय 18 में वापस आता है जब यीशु को गिरफ्तार कर लिया जाता है। इसलिए, हम यीशु को अभी भी गलील में पाते हैं जैसा कि हम जॉन अध्याय 7 में शुरू करते हैं। और जॉन अध्याय 7 में, यीशु अपने भाइयों से बात कर रहे हैं और वे चर्चा कर रहे हैं कि क्या उन्हें दावत के लिए यरूशलेम जाना चाहिए या नहीं। तो, सबसे पहले, कालक्रम पर एक टिप्पणी।

जब हम जॉन 7 पर आते हैं, भले ही हम समग्र रूप से सुसमाचार की कहानी के आधे से भी कम समय में हों, मुझे लगता है कि हम पहले से ही यीशु के जीवन और मंत्रालय, उनके मंत्रालय के आखिरी कई महीनों के अंत के करीब हैं, क्योंकि यह यह झोपड़ियों के पर्व का समय है, अध्याय 7 श्लोक 2, जिसे अन्यथा बूथों के पर्व या हिब्रू में सुक्कोट के रूप में जाना जाता है, जो एक शरद ऋतु का त्योहार है। हम जॉन अध्याय 10 में यीशु को समर्पण के पर्व या हनुक्का में शामिल होते हुए देखेंगे। तब वसंत ऋतु में फसह जॉन के सुसमाचार में वर्णित आखिरी फसह होगा।

तो, जॉन स्पष्ट रूप से कालक्रम के बारे में नहीं है। जॉन के मन में हमें यीशु और उसके जीवन में चीजों के सटीक समय और सापेक्ष अनुक्रम के बारे में सिखाने के लिए अन्य चीजें हैं। लेकिन जिस हद तक पुस्तक में हमारे पास कालानुक्रमिक संदर्भ हैं, यह हमें पतझड़ से लेकर उस वसंत तक ले जाएगा जिसमें यीशु को यरूशलेम में क्रूस पर चढ़ाया गया था।

तो, हमारे पास यहां उल्लिखित तीन अलग-अलग दावतें हैं जो किताब में आती हैं, जो हमें जॉन में अध्याय 5 से 10 तक तथाकथित दावत चक्र का हिस्सा बनाती हैं। हम हर बार एक नया अध्याय शुरू करते समय इसे ध्यान में रखते हैं। कथा प्रवाह. तो बस यह देखने के लिए जल्दी से आगे बढ़ें कि इस अध्याय में क्या होता है।

यह एक बहुत ही अस्थिर करने वाला अध्याय है, एक ऐसा अध्याय जहां यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यीशु के बारे में बहुत अधिक मतभेद है और बहुत कुछ ऐसा चल रहा है जो दिखाता है कि लोग उसके बारे में बहस कर रहे हैं और उस पर विश्वास नहीं कर रहे हैं। यहां तक कि अध्याय शुरू होते ही उसके अपने भाइयों को भी ऐसे लोगों के रूप में दिखाया गया है जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि अध्याय की शुरुआत में वे उससे कह रहे हैं कि त्योहार नजदीक है और वे उससे कह रहे हैं कि उसे वहां जाना चाहिए झोपड़ियों के पर्व में और उसका काम करो और लोगों को उस पर विश्वास दिलाओ। निःसंदेह, यूहन्ना संपादक पद 5 में टिप्पणी करता है, यहाँ तक कि उसके अपने भाइयों ने भी उस पर विश्वास नहीं किया।

इसलिए, वे उसे अपने और अपने विश्वास को आगे बढ़ाने के लिए यरूशलेम जाने के लिए नहीं कह रहे थे। वे अनिवार्य रूप से बस यह कह रहे थे कि यह आपका कार्यक्रम है, यह आपकी चीज़ है, तो आप वहां जाकर इसे क्यों नहीं करते, जाहिर तौर पर एक तरह से उपहासपूर्ण तरीके से। निःसंदेह, हमें जॉन 7 के पहले दो छंदों में पहले ही बताया जा चुका है कि यीशु वास्तव में यहूदिया और यरूशलेम में नहीं पाया जाना चाहता था क्योंकि वहां यहूदी नेता पहले से ही उसे गिरफ्तार करने और फांसी देने का रास्ता तलाश रहे थे।

तो, जैसा कि यह पता चला है कि यीशु श्लोक 6 में इन रहस्यमय बयानों में से एक कहते हैं, मेरा समय अभी तक नहीं आया है, आप कभी भी जा सकते हैं, आपका समय ऐसा करेगा, दुनिया आपसे नफरत नहीं कर सकती, लेकिन यह मुझसे नफरत करती है क्योंकि मैं गवाही देता हूँ कि इसके काम हैं बुराई। तुम उत्सव में जाओ, मैं इस उत्सव में नहीं जा रहा क्योंकि मेरा समय अभी पूरी तरह नहीं आया है। यह कहने के बाद वह गलील में रहने लगा।

हालाँकि, जैसा कि कुछ दिनों बाद कहानी सामने आने पर यह स्पष्ट हो गया कि वह वास्तव में यरूशलेम में उत्सव में गया था। इसलिए, हमें यह समझने पर थोड़ा ध्यान देना होगा कि उसने उन्हें कैसे बताया कि वह नहीं जा रहा था लेकिन बाद में उसने जाने का फैसला किया। इसलिए, हम यह समझने के तरीकों का पता लगा सकते हैं कि संभवतः यहां इतना अधिक विस्तार नहीं होगा क्योंकि अन्य अधिक महत्वपूर्ण चीजें हमारा समय ले लेंगी।

तो, आयत 10 हमें बताती है कि अपने भाइयों के दावत के लिए चले जाने के बाद यीशु वास्तव में यरूशलेम गए और अंततः सिखाया। हम समझते हैं कि श्लोक 14 में उत्सव के आधे समय के बाद, उन्होंने मंदिर में पढ़ाना शुरू किया। इसलिए, वह अंततः मंदिर में जाता है लेकिन वह छिपकर जाता है ताकि लोग यह न देख सकें कि वह क्या कर रहा है ताकि भीड़ न भड़के क्योंकि स्पष्ट रूप से पद 10 के आधार पर यहूदी नेताओं ने उसे पकड़ने की कोशिश की थी वह और यहां तक कि भीड़ भी आश्चर्यचकित थी कि वह कहां सोच रहा था कि वह वहां होगा और आप श्लोक 12 और 13 में देखते हैं कि शेष अध्याय में क्या होगा।

भीड़ के बीच उसके बारे में कानाफूसी फैल गई, कुछ ने कहा कि वह एक अच्छा आदमी था, दूसरों ने उत्तर दिया, नहीं, वह लोगों को धोखा देता है। तो, जो लोग कह रहे थे कि वह एक अच्छा आदमी है, यीशु के बारे में उनके दृष्टिकोण की प्रकृति क्या होगी? शायद ये उस तरह के लोग होंगे जिनका उल्लेख अध्याय 2 में किया गया है जो यीशु के बारे में कुछ हद तक जानते थे और जिन्होंने उनके द्वारा किए जा रहे अद्भुत कार्यों को देखा था और इस अर्थ में उन पर विश्वास किया था। उस पर विश्वास था कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे भगवान ने कुछ गुणों, कुछ मूल्यों के साथ भगवान और उसके राज्य के लिए भेजा है।

मेरे विचार से यह एक और प्रश्न है कि क्या यह यीशु में एक सच्चा बचाने वाला विश्वास साबित होगा क्योंकि वह वास्तव में अस्तित्व में था। तो, श्लोक 12 और 13 में यहां भीड़ के बीच इस विभाजन को उन नेताओं द्वारा बढ़ाया गया है जो यीशु को पकड़ने के लिए निकले हैं और जो उसे गिरफ्तार करने के लिए लोगों को भेजने जा रहे हैं ताकि वे उसे खत्म कर सकें। तो, स्पष्ट रूप से दावत का पहला भाग यीशु यरूशलेम में है, लेकिन दावत के बीच में अभी तक सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया है, श्लोक 14 में कहा गया है कि उसने वहां पढ़ाना शुरू किया और बोलचाल की भाषा शुरू होने के साथ ही चीजें शुरू हो गईं।

अतः कुछ यहूदी चकित होकर पूछने लगे कि इस मनुष्य को बिना सिखाए यह विद्या कहां से मिल गई। यीशु वैसा नहीं था जैसा हम अब कह सकते हैं कि वह एक मदरसा स्नातक था, वह किसी भी रब्बी से जुड़ा नहीं था इसलिए लोगों को आश्चर्य हुआ कि उसे वह ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ जो उसके पास था। इसलिए, वह श्लोक 16 से 19 में समझाता है कि उसकी शिक्षा पिता से है जैसा कि उसने अध्याय 5 में पिता के एजेंट के रूप में सिखाया है कि वह जो कुछ भी कहता है और जो कुछ भी करता है वह परमेश्वर पिता से आता है जिसे वह अपने पिता के रूप में वर्णित करता है।

इसलिए, वह श्लोक 19 में वहां के लोगों पर कानून का पालन न करने का भी आरोप लगाता है। क्या मूसा ने तुम को व्यवस्था नहीं दी, तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता, तुम मुझे क्यों मार डालना चाहते हो? तो भीड़ कहती है कि आप क्या बात कर रहे हैं, हम आपको मारने की कोशिश नहीं कर रहे हैं और वे कहते हैं कि आप पर भूत सवार होगा, आप ऐसा विचार क्यों रखेंगे? क्या ये लोग यह अच्छी तरह से जानते हुए कह रहे थे कि अधिकारी यीशु की तलाश कर रहे थे और सिर्फ टाल-मटोल कर रहे थे या क्या वे वास्तव में यीशु के खिलाफ साजिश में निर्दोष थे या नहीं, इसका फैसला आप ही कर सकते हैं। तो, यीशु आगे कहते हैं, इसलिए हमारे पास छंद 21 से 24 तक एक और बड़ा लाल अक्षर खंड है, शिक्षण का एक और खंड यीशु कहता है कि मैंने एक चमत्कार किया और आप सभी आश्चर्यचकित हैं कि वह किस चमत्कार की बात कर रहा है? सबसे अधिक संभावना है कि अध्याय 5 में वह आदमी है जिसे उसने बेथेसडा तालाब में लकवाग्रस्त आदमी को ठीक किया था और वह निश्चित रूप से यीशु और यरूशलेम में धार्मिक नेताओं के बीच बहस की शुरुआत के संघर्ष की शुरुआत थी।

मैंने एक चमत्कार किया और आप सभी अभी भी चकित हैं क्योंकि मूसा ने आपको खतना दिया था, हालांकि वास्तव में यह मूसा से नहीं आया था, बल्कि कुलपतियों के दिलचस्प बिंदु से यीशु ने कहा था कि खतना उत्पत्ति की पुस्तक में शुरू हुआ था, निर्गमन की पुस्तक में नहीं। तुम सब के

दिन एक लड़के का खतना करते हो, इसलिए वह उनसे कह रहा है कि आठवें दिन खतने की व्यवस्था का पालन करने के लिए तुम सब्त का दिन तोड़ते हो। तो, पद 23 यदि सब्त के दिन एक लड़के का खतना किया जा सकता है ताकि मूसा का कानून न टूटे तो तुम सब्त के दिन इस लकवे के मारे हुए की देखभाल करने के लिए मुझ पर क्रोधित क्यों हो? मैंने उसके पूरे शरीर का ख्याल रखा, तुम्हें खतने से कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन इसे नहीं।

इसलिए, वह कह रहे हैं कि इस सतही निर्णय को बंद करो, श्लोक 24 केवल दिखावे के आधार पर निर्णय करना बंद करो, इसके बजाय सही ढंग से निर्णय करो। इसलिए, सब्बाथ कानून को समझने का यीशु का तरीका यहां समझाया गया है और यह फरीसी परंपरा से अलग है। तो, श्लोक 25 में यीशु पर निरंतर विभाजन बिल्कुल स्पष्ट है, यह हमें उसके बारे में बोलने वाले अधिकारियों तक ले जाता है।

तो उथल-पुथल के दौरान सभी लोग बूथों की दावत के लिए वहां जा रहे थे, यरूशलेम लोगों से खचाखच भरा हुआ था, यीशु भीड़ में आ-जा रहे थे, कुछ लोग उसे पसंद कर रहे थे, वास्तव में उसे समझ नहीं पा रहे थे, शायद कुछ लोग उस पर सच्चा विश्वास कर रहे थे, अन्य लोग उस पर संदेह कर रहे थे। अन्य लोग उसे मारने की कोशिश कर रहे थे, इस तरह की सभी तरह की सकारात्मक और नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ, यरूशलेम के कुछ लोगों ने श्लोक 25 से पूछना शुरू कर दिया कि क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे वे यहाँ मारने की कोशिश कर रहे हैं, वह सार्वजनिक रूप से बोल रहा है जिसके बारे में वे कुछ नहीं कर रहे हैं अधिकारियों ने वास्तव में यह निष्कर्ष नहीं निकाला है कि वह मसीहा है, लेकिन हम जानते हैं कि जब मसीहा आएगा तो किसी को नहीं पता होगा कि वह कहां से है। तो ऐसे लोगों का एक समूह था जो सोचते थे कि मसीहा की उत्पत्ति बहुत रहस्यमय होगी क्योंकि वे जानते थे कि यीशु की उत्पत्ति नासरत के गलील के एक व्यक्ति के रूप में हुई थी, उन्हें लगा कि वह मसीहा नहीं हो सकते। तो जारी अराजकता के बीच में यीशु को पद 28 में फिर से चित्रित किया गया है, यह चिल्ला रहा है कि आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ और आप जानते हैं कि मैं कहां से हूँ मैं यहां अपने अधिकार पर नहीं हूँ, जिसने मुझे भेजा है वह सच है आप नहीं मैं उसे नहीं जानता लेकिन मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उससे हूँ और उसने मुझे भेजा है।

यह अनिवार्य रूप से उस सार को दोहराता है जो यीशु उन्हें लकवे के रोगी को ठीक करने के बाद अध्याय 5 में बता रहे थे। तो यहाँ अध्याय 7 में यीशु जो कह रहे हैं वह मूल रूप से उन सभी बातों का दोहराव है जो उन्होंने पहले ही अध्याय 5 में अपनी पहचान के बारे में, सब्त के दिन उनके काम करने के बारे में, उनके पिता के एजेंट होने के बारे में और यदि आप मुझे अस्वीकार कर रहे हैं तो आप अस्वीकार कर रहे हैं, के बारे में कहा है। जिसने मुझे भेजा है। श्लोक 30 इस पर प्रतिक्रिया के बारे में बताता है, उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन किसी ने उस पर हाथ नहीं उठाया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था, जो थोड़ा रहस्यमय है, कुछ लोग सोचते हैं कि यीशु ने गिरफ्तारी से बचने के लिए कुछ अलौकिक किया था, लेकिन मैं ऐसा नहीं करता। जानते हैं कि हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा, लेकिन मुझे लगता है कि निश्चित रूप से ईश्वर परिस्थितियों को व्यवस्थित कर रहा था ताकि यीशु को इस बिंदु पर गिरफ्तार न किया जाए क्योंकि अभी समय नहीं आया था।

इसलिए कुछ लोग उसे गिरफ्तार करने की कोशिश कर रहे थे, कुछ को संदेह था कि वह वही है जो उसने कहा था कि वह अभी भी श्लोक 31 पर ध्यान दे रहा है, भीड़ में से कई लोगों ने उस पर विश्वास किया, उन्होंने कहा कि जब मसीहा आएगा तो क्या वह इस आदमी से अधिक चमत्कार दिखाएगा, दूसरे शब्दों में वे कह रहे थे कि क्या है यीशु को उन्हें मनाने के लिए क्या करना था, यदि वे उस पर विश्वास नहीं करने जा रहे थे तो वह और क्या कर सकता था, बस उन्हें उसे अस्वीकार करने दें क्योंकि उसने निश्चित रूप से उन्हें पर्याप्त सबूत दिए हैं कि वह खुद को मसीहा साबित कर सकता है। यहां 731 में यह पाठ बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि अंधे ने अध्याय 9 में कहा था जब वह यीशु की पहचान के बारे में फरीसियों के साथ विवाद कर रहा था, उन्होंने कहा कि वह भगवान से नहीं हो सकता, उसने सब्त के दिन और अंधे पर काम किया। आदमी ने कहा ठीक है शायद आप सही हैं लेकिन मुझे पता है कि मैं एक बार अंधा था अब मैं देख सकता हूँ आप इससे इनकार नहीं कर सकते। तो यह भीड़ के बीच यीशु की पहचान के बारे में एक व्यावहारिक तर्क है, लेकिन मुझे लगता है कि कई लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया है।

इसलिए एक बार फिर हम अपने आप से पूछते हैं जब हम देखते हैं कि भीड़ में से कई लोग उस पर विश्वास करते थे, तो क्या यह पुष्टि करता है कि ये लोग सच्चे शिष्यों से युक्त थे, कि उनके पास एक विश्वास था जो यीशु पर कायम रहेगा और बना रहेगा या ये लोग जो सिर्फ प्रभावित हुए थे लोगों की तरह उसने जो चमत्कार किए वे अध्याय 2 के अंत में वापस आ गए। इसलिए, संकेत और विश्वास का विषय एक बार फिर जॉन के सुसमाचार में व्याख्या का विषय बन गया है। इसलिए, 732 से शुरू करके यीशु को उतना चित्रित नहीं किया गया जितना कि वह चारों ओर घूम रहा था और भीड़ से बात कर रहा था, अब ध्यान यरूशलेम में नेताओं और उसे गिरफ्तार करने के उनके प्रयास पर है। इसलिए, वे इसमें सफल नहीं हैं और इसलिए हमने उनके साथ उनकी पहचान के बारे में यह छोटी सी बहस की है।

तो, श्लोक 32 के साथ शेष अध्याय में ध्यान धार्मिक नेताओं पर है। इसलिए नेता यीशु को गिरफ्तार करना चाहते हैं ताकि वे भीड़ को उसके बारे में कानाफूसी करते हुए सुन सकें, मुख्य पुजारी और फरीसी उसे गिरफ्तार करने के लिए गार्ड भेजते हैं और जाहिर तौर पर जब उसे गिरफ्तार करने के लिए भेजे गए गार्ड उसका सामना करते हैं तो वे कुछ हद तक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं जो मुझे लगता है कि शायद है वे उसकी सारी शिक्षाओं में इतने कठोर हैं कि वे अपना मिशन पूरा करने में असमर्थ हैं। तो, हमारे पास यहाँ श्लोक 33-34 में यीशु की एक और शिक्षा है।

मैं थोड़े समय के लिए तुम्हारे साथ हूँ, फिर मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है, तुम मुझे ढूँढोगे, लेकिन तुम मुझे वहाँ नहीं पाओगे जहाँ मैं हूँ, तुम नहीं आ सकते। 33-34 का यह अंश अध्याय 13 में दोहराया गया है जब यीशु यहूदा के जाने के बाद नई आज्ञा देने वाले थे। वह कहता है कि आपको याद है कि मैंने यहूदियों से कैसे कहा था कि मैं जहाँ जा रहा हूँ वहाँ आप ठीक से नहीं आ सकते, मैं अब आपको वही बात दोहरा रहा हूँ इसलिए हम इस कहावत को अध्याय 13 में फिर से देखेंगे।

तो जब यहूदियों ने यह सुना तो भीड़ एक दूसरे से कह रही थी कि वह क्या बात कर रहा है, वह कहाँ जाना चाहता है, हम उसे ढूँढ़ नहीं पा रहे हैं, इसलिए उन्होंने सोचा कि वह बाहर जा रहा है और यहूदी फैलाव के बीच एक भ्रमणशील यात्रा करेगा। यूनानियों में और यूनानियों को संभवतः

यूनानियों द्वारा पढ़ाया जाता है, इसका मतलब यह नहीं है कि जातीय रूप से ग्रीक लोग हैं, लेकिन अधिक संभावना यहूदी लोग हैं जो यहूदी फैलाव का हिस्सा हैं और यहूदी धर्म के अधिक ग्रीसीकृत या यूनानीकृत क्षेत्रों में रह रहे हैं। तो, वे कथन से भ्रमित हो गए हैं इसलिए श्लोक 37 में हम उस पर आते हैं जो कई मायनों में अध्याय का सबसे धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह इन कथनों में से एक है जहां यीशु और आत्मा का एक साथ उल्लेख किया गया है। तो, दावत के आखिरी दिन, आपको याद है कि यीशु ने त्योहार के बीच में पद 14 में शिक्षा देना शुरू किया था, इसलिए पर्व के आखिरी दिन हम यहां पद 37 में हैं, त्योहार का सबसे बड़ा दिन यीशु खड़े हुए और कहा ऊँचे शब्द से बोलो, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह पी ले, क्योंकि धर्मग्रंथ में कहा गया है कि उनके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।

इसका एक वैकल्पिक अनुवाद होगा और हम बताएंगे कि बाद में जो कोई प्यासा हो उसे मेरे पास आने दो और पीने दो, लेकिन जो मुझ पर विश्वास करता है उसे जाने दो, मुझे खेद है कि जो कोई विश्वास करता है उसे जो प्यासा है उसे मेरे पास आने दो और जो कोई मुझ पर विश्वास करता है उसे पीने दो, जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है कि उनके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी। तो, इस पद में प्रश्न, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, यह है कि क्या यीशु स्वयं को विश्वासियों के लिए आत्मा के स्रोत के रूप में बोल रहा है या विश्वासियों को स्पष्ट रूप से अन्य लोगों के लिए आत्मा के स्रोत के रूप में बोल रहा है। किसी भी घटना में श्लोक 39 से उनका तात्पर्य उन लोगों के लिए आत्मा से था जो उस पर विश्वास करते थे, उन्हें बाद में उस बिंदु तक प्राप्त करना था क्योंकि आत्मा को अभी तक नहीं दिया गया था क्योंकि यीशु को अभी तक महिमामंडित नहीं किया गया था, एक और कथन जो ऊपरी कमरे की शिक्षा के समान लगता है अध्याय 14 से 16 तक के विदाई प्रवचन पर बाद में और चर्चा करेंगे।

इसलिए, जब उन्होंने पद 37 से 39 में यीशु को अपने बारे में ये बातें कहते हुए सुना तो कुछ लोगों ने कहा कि निश्चित रूप से यह व्यक्ति भविष्यवक्ता है इसलिए हम व्यवस्थाविवरण 18 के भ्रम में वापस आ गए हैं जिसे हमने पिछले अध्याय में अध्याय 6 में देखा था। दूसरों ने कहा कि वह मसीहा था, शायद भविष्यवक्ता होने के कारण मसीहा होना उनकी सोच में एक ही था या शायद उनके मन में पैगंबर के बीच अंतर था जो शायद एक सैन्य या नागरिक नेता था और मसीहा एक आध्यात्मिक नेता था। किसी भी घटना में, इस भीड़ के बीच मसीहा की समझ का प्रकार काफी भिन्न था। फिर भी अन्य लोगों ने पूछा कि श्लोक 41 में तीसरी राय है कि मसीहा गलील से कैसे आ सकता है? इसलिए वे जानते थे कि यीशु एक गैलीलियन था, वे मीका अध्याय 5 श्लोक 2 के बारे में सोच रहे थे, उन्होंने कहा कि क्या धर्मग्रंथ यह नहीं कहता है कि मसीहा डेविड के वंशजों से और बेथलेहम शहर से आएगा जहां डेविड रहता था।

इस प्रकार लोग यीशु की आयत 43 के कारण विभाजित थे। इसलिए, यदि हम इस अध्याय को पढ़ रहे हैं तो हम कहते हैं कि कोई मज़ाक नहीं है, अंततः हमें यह स्पष्ट हो गया कि लोग निश्चित रूप से विभाजित थे। इसलिये कुछ लोग उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला।

इस बीच धार्मिक नेताओं के मुख्यालय में, जबकि यह सारी उथल-पुथल सड़कों पर चल रही थी, हमारे पास मुख्य पुजारी और फरीसी थे, जिन्होंने उन लोगों से पूछा, जिन्हें उन्होंने यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भेजा था, आप उसे अंदर क्यों नहीं लाए? उनकी प्रतिक्रिया काफी दिलचस्प और कुछ हद तक हैरान करने वाली है, वे कहते हैं कि किसी ने भी इस तरह से बात नहीं की है जैसे यह आदमी करता है। तो, हमें यह आभास देने का अवसर मिलता है कि वे यीशु के साथ वहां थे, शायद उन्हें उन्हें गिरफ्तार करने का अवसर मिला था, लेकिन उनके बोलने के तरीके और वह जो कह रहे थे, उससे वे इतने प्रभावित हुए कि वे इतने हैरान और मंत्रमुग्ध हो गए कि आप जो भी शब्द वहां रखना चाहते हैं, वे उन्हें यह पता लगाने में कठिनाई हो रही थी कि उन्हें उसे गिरफ्तार करना चाहिए या नहीं। एक और संभावना यह होगी कि वे डरे हुए थे अगर उन्होंने उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की तो वहां इतने सारे लोग थे जो यीशु का समर्थन कर रहे थे कि उन्होंने दंगा शुरू कर दिया होता और भीड़ द्वारा पीटा गया होता, कौन जानता है कि इस आदमी ने कभी भी इस तरह से बात नहीं की होगी बोलता है उन्होंने कहा।

तो, अध्याय का अगला भाग काफी दिलचस्प है जहां हम भीड़ में नहीं बल्कि स्वयं धार्मिक नेताओं के साथ यीशु की पहचान पर बहस करते हैं। वे उन लोगों से कहते हैं जिन्हें उन्होंने यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भेजा था, क्या आपका मतलब है कि उसने तुम्हें भी धोखा दिया है? क्या फरीसियों के शासकों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है? नहीं, लेकिन यह भीड़ जो कानून के बारे में कुछ नहीं जानती, उनके लिए यह अभिशाप है। तो, रब्बीनिक यहूदी धर्म में मिश्राह और अन्य रब्बीनिक स्रोतों में उस भूमि के लोगों के बारे में एक अभिव्यक्ति है जो कानून नहीं जानते थे, उन्हें अम - हारेट्ज़ कहा जाता है।

अम्हारेट्ज़ भूमि के लोग तलमुदीम और टोरा के छात्रों से अलग हैं और इसलिए उन्हें कभी-कभी हेय दृष्टि से देखा जाता है, वे खबरिम के सदस्य नहीं हैं, यानी टोरा के अध्ययन में शामिल सहकर्मी हैं। तो शायद हम यहां फरीसी और पुरोहित लोगों का एक दृश्य देख रहे हैं जो समाज के शैक्षिक पक्ष के साथ-साथ मंदिर की स्थापना के ऊपरी स्तर का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और वे आम लोगों को हेय दृष्टि से देख रहे हैं। मूल रूप से एक भीड़ उन्हें क्या पता कि उन पर कोई अभिशाप है। हालाँकि महासभा में मुख्य पुजारियों और फरीसियों के बीच परिषद में अल्पमत की रिपोर्ट है।

तो, अध्याय तीन से हमारा मित्र निकुदेमुस फिर से सामने आ रहा है, और श्लोक 50 में निकुदेमुस जो पहले यीशु के पास गया था और जो उन्हीं में से एक था, ने पूछा कि क्या हमारा कानून किसी व्यक्ति को बिना उसकी बात सुने यह जानने के लिए दोषी ठहराता है कि वह क्या है? कर रहा है। इसके बाद निकुदेमुस उनसे निष्पक्षता का एक क्षण माँगता है और वैसे, यदि आप मिश्राह और टैक्टेट को देखें जो महासभा के बारे में बोलता है तो मिश्राह में इस बारे में बहुत ही ईमानदार नियम हैं कि महासभा को विशेष रूप से पूंजीगत अपराधों के मामले में कैसे काम करना है ताकि न्याय का गर्भपात कभी न हो। और इसलिए, जब हम सुसमाचार में पढ़ते हैं कि सैन्हेड्रिन ने यीशु के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया था, तो मिशनाह को पढ़ने से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वे न केवल सिनोप्टिक्स के दृष्टिकोण से इसे अन्यायपूर्ण कर रहे थे, बल्कि वे इसे अपने दृष्टिकोण से भी अन्यायपूर्ण कर रहे थे। दिशानिर्देश।

तो, निकोडेमस ने पूछा कि यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न प्रतीत होता है, जो कि यीशु के लिए बस थोड़ी सी बुनियादी निष्पक्षता के बारे में पूछ रहा है और इसलिए उसका उत्तर यह है कि उनका अपमान करना निकोडेमस का अपमान करना है, जिस तरह से उन्होंने उन लोगों का अपमान किया था, जिन्हें उन्होंने यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भेजा था। श्लोक 47. 47 में उन्होंने गिरफ्तारी दल से कहा, तुम्हारा मतलब है कि उसने तुम्हें भी धोखा दिया है? 52 उन्होंने नीकुदेमुस से कहा, क्या तू भी गलील का है? यह मूल रूप से गैलिलियों के खिलाफ एक गाली है कि वे देहाती बेवकूफ लोग हैं जो शायद टोरा के पालन में उतने ईमानदार नहीं हैं। बस किसी भी जातीय या सामाजिक अपमान के बारे में सोचें जिससे आप परिचित हैं और मूल रूप से वे वहीं जा रहे थे।

इसलिए, उनके पास वास्तव में निकोडेमस से कहने के लिए कुछ भी नहीं था इसलिए उन्होंने एक विशेषण पर भरोसा किया। उन्होंने उसे एक नाम दिया और इसमें शामिल होने का यही उनका तरीका था। हालाँकि, उन्होंने इस बात पर गौर किया कि आप पाएंगे कि कोई भविष्यवक्ता गलील से नहीं आता है।

मुझे लगता है कि यदि आप इसका अध्ययन करेंगे तो आपको पता चलेगा कि यह कथन पूरी तरह से सत्य नहीं है, लेकिन यह हमारे लिए अध्याय की अन्य चीजों जितना महत्वपूर्ण नहीं है, इसलिए हम इसे वैसे ही छोड़ देंगे जैसे यह है। इसलिए, जब हम यीशु को फिर से यरूशलेम में पाते हैं तो हम उस स्थान पर खुद को तरोताजा करने के लिए बस एक पल लेते हैं जहां वह स्पष्ट रूप से मंदिर पर्वत के आसपास कहीं थे। तीर्थयात्री शहर में प्रवाहित हो रहे होंगे।

ऐसा पता चलता है कि मिश्रा के अनुसार सुकोट के पर्व के समय, पुजारी पर सिलोम के तालाब से पानी खींचने पर जोर दिया गया था। यूहन्ना अध्याय 9 में विशेष रूप से सिलोम के तालाब का जिक्र किया गया है, जहां यीशु ने उस अंधे व्यक्ति से कहा कि वह ठीक हो गया है और वह सिलोम के कुंड में जाकर नहाए। तो, हम अध्याय 9 में उस पर वापस आकर इसके बारे में कुछ और बात करेंगे।

मंदिर के आसपास किसी भी घटना में जहां यीशु जा रहे थे, हम बस इन तस्वीरों को देखते हैं और खुद को इस तथ्य को याद दिलाने की कोशिश करते हैं कि मंदिर के दिनों में अल-अक्सा मस्जिद में जहां चट्टान का गुंबद खड़ा था, ये सीढ़ियां ठीक थीं। यहाँ सीढ़ियाँ रही होंगी जो मंदिर में प्रवेश करती थीं। डबल गेट और ट्रिपल गेट भूमिगत सीढ़ियाँ यहाँ के एक क्षेत्र में आती हैं जो चारों ओर गैर-यहूदियों का दरबार है जो आपको फिर इज़राइल के दरबार में ले जाती है और अंततः इस क्षेत्र में कहीं जहाँ मस्जिद खड़ी है अब यहाँ पवित्र स्थान होगा यहाँ के निकट रहे हैं। यदि आप सोच रहे हैं कि वेलिंग वॉल कहां है और इस चित्र में वह सब कुछ है, यह बड़ा प्लाजा यहीं है, जो उस तक जाता है और वेलिंग वॉल, रिटेनिंग वॉल, पश्चिमी दीवार, मेरा मानना है कि इसे हिब्रू में कोटेल कहा जाता है, यही कहीं है खराब परिप्रेक्ष्य वास्तव में इसे नहीं देख सकता है लेकिन यहीं यह क्षेत्र मदद करता है।

तो, यहां इज़राइल संग्रहालय के पास जेरूसलम मॉडल से दक्षिण का एक दृश्य आपको उन द्वारों को दिखा रहा है जो आपको दक्षिण से मंदिर के मैदान में ले जाएंगे, और यहां निचले हिस्से में वह

जगह है जहां शायद सिलोम का पूल था। इसलिए, सुकोट के पर्व के संबंध में पुजारी यहां पानी लेकर आए और उसे जल चढ़ाने की रस्म के हिस्से के रूप में मंदिर में वापस ले गए और फिर हम बाद में अध्याय 9 में सिलोम के पूल के बारे में और अधिक देखेंगे। ऐसा माना जाता है कि जॉन अध्याय 7 में यीशु की कल्पना, जब वह जीवित जल की नदियों के बारे में बात करता है, तो विश्वासियों को मेरी दृष्टि से ऐसा लगता है कि वह शायद सुकोट के पर्व के बारे में बात कर रहा था, जिसमें सिलोम के पूल से पानी लेना शामिल था। इसलिए, अध्याय के बीच में, हम इस बात पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर रहे हैं कि तमाम उथल-पुथल के बीच वहां क्या चल रहा है।

यीशु सार्वजनिक रूप से सप्ताह के मध्य से पढ़ा रहे हैं और उनके पढ़ाना शुरू करने से पहले ही उनके बारे में ये सभी अटकलें हैं और जब वह सिखाते हैं तो उन पर ये सभी अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ होती हैं। तो यह अध्याय साहित्य के रूप में कैसे काम करता है? हमें इसे कैसे प्राप्त करना है? मुझे ऐसा लगता है कि हमारे पास यहां जो कुछ है वह 737 से 739 में यीशु की शिक्षा तक ले जाने वाला एक पाठ है और फिर उससे दूर जाने वाला एक पाठ है। तो, उन वर्गों से जो मूल रूप से नेताओं की यीशु को गिरफ्तार करने की योजना में परिणत होते हैं।

तो, 7 से 32 से 36 तक आप सभी विभिन्न विचारों और नेताओं की उसे गिरफ्तार करने की योजना के बारे में जानेंगे। फिर आपके पास अध्याय 37 श्लोक 37 से 39 तक है जो अध्याय में यीशु की केंद्रीय शिक्षा है। नया शिक्षण उस बात को दोहराता नहीं है जो उन्होंने अध्याय 5 में पहले ही कहा था। फिर आपके पास छंद 40 से 52 तक आंतरिक परिषद की बैठक की चर्चा है।

इसलिए, नेता अपने अधिकारियों को यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भेजते हैं 7:32 से 36। यीशु आत्मा के बारे में सिखाते हैं और उनकी शिक्षा इतनी प्रभावशाली या मंत्रमुग्ध करने वाली है कि अधिकारी यीशु को गिरफ्तार किए बिना लौट जाते हैं और इसलिए हमारे पास परिषद में आपस में लड़ाई होती है। किसी को आश्चर्य होता है कि क्या निकोडेमस के साथ परिषद में कोई और भी शामिल हुआ था।

अध्याय 19 में यीशु के शरीर को दफनाने में उनके साथी, अरिमथिया के जोसेफ को भी यहूदी परिषद के सदस्य के रूप में वर्णित किया गया है। इसलिए, हमें आश्चर्य है कि क्या निकोडेमस इस समय कम से कम अरिमथिया के जोसेफ द्वारा निजी भावना से शामिल हुआ था या शायद ऐसे अन्य लोग भी थे जो यीशु में विश्वास करते थे। अगर हम सोचते हैं कि सभी यहूदी नेता यीशु के दुश्मन हैं तो हम खुद से गलती करते हैं।

उनमें से सभी नहीं थे। जाहिर है, अधिकांश अधिनियमों की पुस्तक के आरंभ में ही हम यरूशलेम में सुसमाचार को आगे बढ़ते हुए देखते हैं और हमें वहां बताया गया है कि कई पुजारी लोग, इज़राइल के कई नेता इन दिनों के दौरान यीशु में विश्वास करने वाले बन गए थे। तुलनात्मक रूप से कुछ स्पष्ट रूप से कहा जाए तो, लेकिन ऐसा नहीं है कि किसी भी यहूदी लोगों ने यीशु को अस्वीकार नहीं किया।

जब हम जॉन के सुसमाचार का अध्ययन करते हैं तो हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम एक प्रकार की अंतर्निहित यहूदी-विरोधी भावना में न पड़ जाएँ। उदाहरण के लिए जॉन 1 में

ऐसे पाठ हैं जहां यह कहा गया है कि वह अपने आप में आ गया, उसके अपने ने उसे प्राप्त नहीं किया। यह एक सामान्य कथन है, लेकिन जाहिर तौर पर उनके अपने कई लोगों ने उन्हें प्राप्त किया, क्योंकि पाठ कहता है कि जितने लोगों ने उन्हें प्राप्त किया, उन्होंने उन्हें ईश्वर की संतान बनने के लिए अधिकृत किया।

इसलिए, हम यहां अध्याय के अंत में जॉन 7 में निकोडेमस के लिए खड़े होते हैं और कम से कम विवेक का एक शब्द, सावधानी का एक शब्द, न्याय का एक शब्द उस लिंग मानसिकता में लाने के लिए जयकार करते हैं जो पहले से ही यीशु का सामना कर रहा है। इसलिए, जब हम इस बारे में सोचते हैं कि जॉन अध्याय 7 और उसके बाद सामग्री के इस खंड में इस समय से क्या चल रहा है, तो हमें इस तथ्य की याद आती है कि यीशु की पहचान और मिशन के बारे में भीड़ के बीच विभाजन, तर्क, संघर्ष थे। हम पहले ही अध्याय 7 में चित्रित देख चुके हैं, इन सभी अंशों को हम पहले ही संक्षेप में देख चुके हैं, इसे बार-बार दोहराया जा सकता है क्योंकि हम समय के इस खंड में आगे देखते हैं जहां यीशु यरूशलेम में भीड़ को पढ़ा रहे हैं। हमारे पास अध्याय 8 में कई अंश हैं जो दिखाते हैं कि यीशु के बारे में बहस में हमारी तीव्रता कैसे बढ़ रही है।

अध्याय 9 में हमारे पास उस अंधे आदमी की कहानी है जो ठीक हो गया है, जिसमें यीशु के प्रति विरोध की तीव्रता भी बढ़ती जा रही है। अध्याय 10 भी जिसे हम एक गर्म अस्पष्ट अध्याय के रूप में सोचते हैं। हम इसे अच्छे चरवाहे का प्रवचन कहते हैं और हम एक प्यारे चरवाहे यीशु का आशीर्वाद पाकर बहुत भाग्यशाली महसूस करते हैं।

दुर्भाग्य से, यह सच है लेकिन संदर्भ में, यह कहानी यीशु के अच्छे चरवाहे होने के सकारात्मक पहलुओं के बारे में नहीं है, बल्कि इस बारे में है कि कैसे यीशु इसराइल के अन्य चरवाहों के साथ नहीं हैं जो दुखी चरवाहे बन जाते हैं जो सिर्फ इसके लिए हैं खुद। मुझे खेद है, संदर्भ में जॉन अध्याय 10 की समग्र मनोदशा बहुत नकारात्मक है और यह दिखाता है कि कैसे यीशु का विरोध बदतर से बदतर होता जा रहा है, अध्याय 10 के अंत में और अधिक चरम पर पहुंच रहा है। आप पहले से ही जानते होंगे कि वे स्वयं को पिता के साथ जोड़ने के कारण यीशु पर एक बार फिर पथराव करने के लिए तैयार हैं। इसलिए जैसे ही अध्याय 10 समाप्त होता है, यीशु थोड़ा समय निकालते हैं, और ट्रांसजॉर्डन जाते हैं, पाठ कहता है कि चीजें वहीं से शुरू हुईं जहां जॉन पहली बार बपतिस्मा दे रहा था।

तो, अध्याय 10 अंत में हमें अध्याय 1 पर वापस ले जाता है और इसलिए वहाँ एक संक्षिप्त राहत की तरह है जो यीशु ने अपने मित्र लाजर के बीमार होने के बारे में सुनने से पहले उस क्षेत्र में लिया था। तो यह सिर्फ हमें यह दिखाने के लिए है कि जैसा कि हम अध्याय 7 में चल रहे इस संघर्ष और इन सभी विभाजनों को देखते हैं, यह अगले कुछ अध्यायों के लिए सामान्य रूप से बहुत अधिक व्यवसाय है। यह उस प्रकार की सामग्री है जिसका हम सामना करने जा रहे हैं और यह वास्तव में जॉन को पढ़ने का एक मजेदार समय नहीं है क्योंकि वहाँ बहुत सारी अराजकता है, बहुत सारी नकारात्मकता है और चीजें बद से बदतर होती जा रही हैं।

इस पाठ की मनोदशा मुझे यरूशलेम की मनोदशा की याद दिलाती है जब हम यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश के बाद के समय के संक्षिप्त सुसमाचार पढ़ रहे थे, जहां वह क्षेत्र में मंदिर के

आसपास घूम रहा था और पढ़ा रहा था और एक के बाद एक व्यक्ति उसके पास आता है और उसे बरगलाने की कोशिश करता है या उससे कुछ ऐसा कहता है जिससे वह मुसीबत में पड़ जाए। यह केवल उथल-पुथल भरा समय है और बहुत सारे संघर्ष हैं और बार-बार आते रहते हैं और अध्याय 7 से 10 तक जॉन में हमारे पास यही है। पृष्ठभूमि के दृष्टिकोण से इसके बारे में सोचते हुए, याद रखें कि यीशु यरूशलेम में हैं। झोपड़ियों का पर्व अक्सर कहा जाता है।

कुछ अनुवाद इसे बूथ कहते हैं, हिब्रू शब्द सुक्कोट है। तो हम हिब्रू बाइबिल से सुक्कोट के बारे में क्या जानते हैं? हमारे पास निर्गमन 23, लैव्यव्यवस्था 23, व्यवस्थाविवरण में इसका वर्णन करने वाले बहुत सारे ग्रंथ हैं, और बाद में यह भी बताया गया है कि इसे नहेमायाह और जकर्याह में कैसे देखा गया था। जकर्याह का पाठ विशेष रूप से दिलचस्प है क्योंकि यह अन्यजातियों के यरूशलेम में झोपड़ियों का पर्व मनाने के लिए आने की बात करता है।

मिश्राह ट्रेक्टेट सुक्कोट आपको बताता है और आपको कुछ अंतर्दृष्टि देता है कि कैसे सुक्कोट को दूसरी शताब्दी, सामान्य युग के अंत तक समझा और अभ्यास किया गया था। उनमें से कई मौखिक परंपराएँ जो अंततः मिशनाह में 200 के आसपास लिखी गईं, शायद पहले से ही प्रभावी थीं और मिशनाह को वास्तव में संपादित और लिखे जाने से 150-200 साल पहले यीशु के दिनों के दौरान पहले से ही लागू की गई थीं। तो यह एक पतझड़ का त्योहार है और इसमें बाहर अस्थायी आवासों में रहने वाले लोगों को शायद दो अलग-अलग चीजें याद रखनी होती हैं।

नंबर एक, जिस तरह से इस्राएल जंगल में घूमता रहा और जिस तरह से वे फसल का जश्न मना सकते थे और अनाज उगा सकते थे। तो, यह एक दावत है जो संभवतः दोनों अर्थों में भगवान की वफादारी का एक स्मारक है। वह ईश्वर फसलों को प्रदान करने में वफादार रहा है और भगवान जंगल में भटकने के दौरान उन्हें संरक्षित करने में अपने लोगों के प्रति वफादार रहा है।

इसलिए, यह अद्भुत होगा यदि हम टोरा में सुक्कोट को और अधिक गहराई से देखने के लिए समय निकाल सकें और देख सकें कि इसे देखने के लिए कैसे तैयार किया गया था और फिर इसके बाद के कुछ संदर्भों को देखें। लेकिन अन्य बातें भी आज हमारे दिमाग में हैं इसलिए हमें इस सामग्री को वैसे ही छोड़ना होगा। यदि आपकी रुचि है, तो उम्मीद है, आप इसे बाद में और देख सकेंगे।

हमारे पास यहां कुछ छवियां हैं कि सुक्कोट को आज एक विशिष्ट अमेरिकी स्थान में कैसे मनाया जाता है। यहां ग्रैंड रैपिड्स में, हमारे पास यहूदी समुदाय हैं और आप सुक्कोट के पर्व के आसपास उनके पार्श्व यार्ड में या शायद उनके पिछवाड़े में इस प्रकार के स्थान देखते हैं। यहां वे जाली के काम का उपयोग कर रहे हैं जिसे आप संभवतः लोवे या बिल्डर्स डिपो या जिसे वे लकड़ी का यार्ड कहते हैं, वहां जाकर खरीद सकते हैं।

तो, वे बस इसे स्थापित कर रहे हैं और विभिन्न प्रकार की शाखाओं का उपयोग कर रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे उन्होंने यहाँ कुछ मक्के के डंठल रखे हुए हैं जो इसे सजा रहे हैं या इसे थोड़ा सा ढकने वाली छत बना रहे हैं। यहां जेरूसलम से ही एक तस्वीर है कि कैसे वे न केवल सड़क के

स्तर पर बल्कि इस अपार्टमेंट की बालकनी क्षेत्र में भी जाली के काम या कुछ प्रकार की अस्थायी शाखाओं के साथ प्लाईवुड शीट का उपयोग कर रहे हैं।

इसलिए, सुक्कोट अभी भी पूरी दुनिया में यहूदी लोगों द्वारा मनाया जाता है। ऐसा लगता है मानो यह कोई खुबसूरत त्योहार ही हो। पतझड़ में बाहर रहना किसे पसंद नहीं है, जब हवा तेज़ होती है और पत्तियाँ गिर रही होती हैं तो यह जीवित रहने का एक अच्छा समय होता है।

लेकिन जब हम जॉन अध्याय 7 को देखते हैं तो शायद धार्मिक रूप से इसके बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात श्लोक 38 में जीवित जल की नदियों के बारे में यीशु का कथन है। इसलिए, हमें जॉन 7:37-39 में फिर से याद दिलाया गया है कि किस तरह से जॉन के सुसमाचार में पानी का प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया गया है, अध्याय 1 में जॉन द बैपटिस्ट तक जाता है जहां वह स्वीकार करता है कि उसका बपतिस्मा पानी का बपतिस्मा है जो लोगों को आध्यात्मिक बपतिस्मा के लिए तैयार करता है। यीशु का अध्याय 2 और 3 में पानी के अतिरिक्त संदर्भ शायद अध्याय 4 में बहुत महत्वपूर्ण हैं जहां यीशु सामरिया के कुएं पर महिला को जीवित जल के बारे में बताते हैं।

उस पाठ का संभवतः जॉन अध्याय 7 से सीधा संबंध है कि कैसे यीशु ने यहां पानी का वर्णन किया है। पुराने नियम को याद करें तो निःसंदेह वहाँ पानी का बहुत अधिक प्रतीकवाद और पानी का उपयोग भी है। व्यवस्थाविवरण 28 यशायाह 44 जैसे ग्रंथ और ये सभी ग्रंथ और यहां तक कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 श्लोक 1 की पुस्तक भी नदी के ईडन गार्डन की नदी की याद दिलाने की बात करती है।

इसलिए, पानी न केवल अपने लोगों के लिए भगवान की देखभाल का प्रतीक है क्योंकि प्राचीन काल में, निस्संदेह, उनके पास हमारे जैसी आधुनिक सुविधाएं नहीं थीं। आपको बस पानी की जरूरत है, आप प्यासे हैं तो आप टोंटी चालू कर देते हैं, प्राचीन समय में ऐसा नहीं था और ऐसी जलवायु में रहते थे जहां शुष्क मौसम और बरसात के मौसम होते हैं, पानी हमेशा उपलब्ध नहीं होता है। इसलिए, आपके पास ऐसी प्रणालियाँ होनी चाहिए जहाँ आपके पास हौज और बाकी सब कुछ हो ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आप जीवित रह सकें, खाना पकाने के लिए पानी का उपयोग करना तो दूर, यहूदी धर्म में धार्मिक शुद्धिकरण के लिए धार्मिक उद्देश्यों के लिए पानी का उपयोग करना तो दूर की बात है।

इसलिए, भविष्य में इज़राइल पर ईश्वर के आशीर्वाद के लिए बाइबिल के भविष्यवक्ताओं में पानी एक बड़ा प्रतीक बन गया है। और इसलिए, जीवित जल की नदियाँ, यीशु की अभिव्यक्ति कुछ ऐसी है जो शायद हमसे उतनी बात नहीं करती है, लेकिन इज़राइल में जीवित जल की नदियाँ एक मौसमी चीज़ की तरह है जिसे आप वसंत ऋतु में अधिक देखेंगे। आप सोचेंगे, आखिरकार भगवान ने भूमि के लिए पानी उपलब्ध कराया है और भगवान वफादार हैं। और इसलिए, जल प्रतीकवाद के बारे में सोचना हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

संभवतः जॉन 7:37-39 में इस पाठ की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशेष रूप से अध्याय 7 श्लोक 38, मिश्रा में एक पाठ के रूप में, यह लगभग 200 ईस्वी के टोरा की प्रारंभिक यहूदी व्याख्या को समझाने वाला एक दस्तावेज है। जब इसे लिखा गया तो इसमें संभवतः यीशु के समय से पहले के

रब्बियों की परंपराएँ शामिल हैं। इसलिए, हम इसे एक दस्तावेज़ के रूप में सोचते हैं जो हमें अग्रभूमि को नहीं बल्कि सुसमाचार की पृष्ठभूमि को समझने में मदद कर सकता है।

सुक्कोट एम-सुक से संबंधित ट्रैक्टेट में मिश्रा ट्रैक्टेट के लिए खड़ा है, सुक्कोट अध्याय 4 छंद 8-10 में पुजारी पदाधिकारी दावत के अंतिम दिन सिलोम के तालाब से, माफ कीजिए, दावत से पानी निकालेंगे और उसे वापस कर देंगे। फिर वहां किए जा रहे कुछ बलिदानों में भोग लगाने के लिए वापस मंदिर में आ गए। इसलिए, लोगों को आश्चर्य होता है कि क्या दावत के आखिरी दिन यीशु वहाँ थे।

श्लोक 37 में कहा गया है कि वह खड़ा हुआ और ऊंचे स्वर से कहा, जो कोई प्यासा हो वह मेरे पास आए और पीए। सवाल यह है कि क्या ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि पुजारी मंदिर से पानी ले रहा था और शायद आप मंदिर में उपयोग करने के लिए कुंड से पानी ले रहे थे। यह एक संभावना है। मैं नहीं जानता कि यह बिल्कुल निश्चित है कि ऐसा हो रहा है लेकिन यह निश्चित रूप से हमें इसके संभावित कारण को समझने में मदद करता है।

जॉन 7 के बारे में एक और बात जो काफी दिलचस्प है वह यह नहीं है कि मिश्रा में कोई पृष्ठभूमि है या नहीं, लेकिन पद 38 में यीशु के मन में क्या है जब वह कहते हैं कि जो कोई भी मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि धर्मग्रंथ कहता है कि जीवित जल की नदियाँ वस्तुतः उसके भीतर से बहेंगी। एनआईवी ने इसे बहुवचन में बदल दिया है क्योंकि वे लिंग-तटस्थ रहना चाहते हैं और मेरे विचार से यह आमतौर पर एक अच्छी बात है।

तो, बाइबल कहाँ कहती है कि जीवित जल की नदियाँ बहेंगी, मुझे नहीं लगता कि इसके लिए मन में कोई विशिष्ट पाठ है जिसे हम कहीं भी पा सकते हैं। यह बहते पानी का ईश्वर का आशीर्वाद होने का सामान्य भविष्यसूचक उपयोग है और जिस तरह से यशायाह 55, जकर्याह 14, और यहजेकेल 47 जैसे ग्रंथ शायद उस तरीके के बारे में बात करते हैं जिसमें ईश्वर इसराइल को प्रचुर मात्रा में पानी का आशीर्वाद देगा। आशीर्वाद बाढ़ की तरह नीचे आएंगे और हर कोई भगवान की भलाई से आप्लावित हो जाएगा।

मुझे लगता है कि यूहन्ना 7 पद 38 के बारे में एक अन्य प्रश्न यह है कि यीशु किस प्रकार जीवित जल की नदियों के बारे में बात करते हैं। आप देखेंगे कि यदि आपके पास अध्ययन बाइबिल या बाइबिल है जिसमें संदर्भ या नोट्स हैं तो एक ईएसवी और एनआईवी नवीनतम अनुवादों में से एक है, शायद एनएलटी भी, हालांकि मैंने इस पर एनएलटी की जांच नहीं की है। अक्सर वे पाठ का अनुवाद कुछ इस तरह करते हैं जैसे हम इसे सुनने के आदी हैं, अगर किसी को प्यास लगे तो वह मेरे पास आए और पी ले। जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा कि धर्मग्रन्थ में कहा गया है, उसके हृदय से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी। उस पाठ का क्या मतलब है? खैर, इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं वे स्वयं जलाशय बन जाएंगे जिनमें से पानी बहता है। दूसरे शब्दों में, आत्मा उनके जीवन से स्पष्ट रूप से अन्य लोगों के लिए प्रवाहित होगी और व्यक्तिगत विश्वासियों से उन्हें आशीर्वाद देगी।

पाठ को देखने का दूसरा तरीका यह होगा कि इसे थोड़ा अलग तरीके से अनुवादित किया जाए, यहां स्लाइड पर इटैलिकाइज़्ड भाग आपको अंतर दिखाता है। इसका अनुवाद इसके स्थान पर किया जा सकता है, यदि हर कोई प्यासा है तो उसे मेरे पास आने दो और पीने दो, जो भी अपने दिल से मुझ पर विश्वास करेगा, उसमें जीवन के जल की नदियाँ बहेगी, इसका अनुवाद इसके बजाय किया जा सकता है, यदि कोई प्यासा है तो उसे मेरे पास अल्पविराम से आने दो, और उसे पीने दो जो मुझ पर विश्वास करता है वह पीता है, जैसा कि धर्मग्रन्थ में कहा गया है, उसके हृदय से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी। इस मामले में वह व्यक्ति जिसके हृदय से आत्मा बहती है वह व्यक्तिगत आस्तिक नहीं है बल्कि वह स्वयं यीशु है।

तो, जब आप समग्र रूप से जॉन के सुसमाचार की शिक्षा के बारे में सोचते हैं तो इसे देखने के इन दो तरीकों में से कौन सा सबसे अच्छा समझ में आता है।

दिलासा देने वाले, सहायक, पवित्र आत्मा की भूमिका पर, यीशु यहाँ स्वयं को आत्मा के रूप में बोल रहे हैं, हो सकता है कि हम आत्मा के उद्देश्य स्रोत शब्द का उपयोग अन्य लोगों के लिए आत्मा के अंतिम स्रोत के रूप में करें। या क्या यह पाठ उस तरीके के बारे में बात कर रहा है जिसमें यीशु विश्वासियों को आत्मा देते हैं और उनमें से ही आत्मा दूसरों के लिए बहती है। तो क्या यह कुछ ऐसा है जो यीशु के अनुयायियों में आत्मा के आंतरिककरण के बारे में है, या यह कह रहा है कि यीशु स्वयं सभी विश्वासियों के लिए आत्मा का स्रोत है?

मेरा मानना है कि जॉन के गॉस्पेल की समग्र शिक्षा को देखते हुए हमें यहां मार्ग के वैकल्पिक अनुवाद के साथ जाना चाहिए, न कि उस अनुवाद के साथ जिसके हम अधिक आदी हैं क्योंकि मुझे नहीं लगता कि जॉन का गॉस्पेल इतना कुछ कह रहा है। व्यक्तिगत विश्वासियों से आत्मा के प्रचुर प्रवाह के बारे में, हालांकि हमारा मानना है कि यह संभव है, और पॉल की बाद की शिक्षा शायद उस जोर के समान है। लेकिन मुझे लगता है कि यह पाठ हमें जो बता रहा है उससे जॉन के प्रकाश में यह अधिक संभावना है कि यीशु ही सच्चा स्रोत और भंडार है जिससे आत्मा बहती है। क्या यह वही नहीं है जो जॉन बैपटिस्ट ने अध्याय 1 में कहा था? यीशु वह है जो आत्मा से बपतिस्मा देता है, क्या वास्तव में अध्याय 3 इसी के बारे में नहीं है? पिता पुत्र को बिना मापे आत्मा देता है। क्या यह वही नहीं है जो हमें ऊपरी कमरे में बताया गया है जहां हमारे पास अध्याय 14, 15, और 16 में अतिरिक्त पाठ हैं जो यीशु के बारे में बात करते हैं और कुछ मामलों में यीशु और उसके पिता विश्वासियों को आत्मा भेजते हैं?

यहां तक कि जॉन अध्याय 20 श्लोक 22 में जॉन में आत्मा का अंतिम संदर्भ है। यीशु कहते हैं कि जब वह शिष्यों पर साँस छोड़ते हैं तो आत्मा को प्राप्त करें। तो, वह आत्मा का स्रोत है इसलिए मुझे लगता है कि जॉन की समग्र शिक्षा प्रभु यीशु मसीह पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रही है जो चर्च में आत्मा लाता है। पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में हमारी समझ के लिए शायद इसके दूरगामी निहितार्थ हैं। इंजील ईसाई समुदाय में हममें से ऐसे लोग हैं जिन्होंने आत्मा के कार्य पर बहुत कम ध्यान दिया है। शायद ऐसे लोग हैं जो आत्मा के कार्य पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं और ऐसा इस तरह से करते हैं जिससे जरूरी नहीं कि प्रभु यीशु का सम्मान हो।

तो, जॉन के सुसमाचार में यह बहुत स्पष्ट है कि आत्मा क्रिस्टोसेंटिक है। हम विशेष रूप से अध्याय 14 से 16 में आत्मा के बारे में जो पढ़ने जा रहे हैं वह यह है कि आत्मा पूरी तरह से यीशु के बारे में है। इसलिए, आत्मा लोगों को यह याद दिलाने के लिए आती है कि यीशु ने क्या सिखाया था और उन्हें यीशु से नई शिक्षाएँ देने के लिए आता है। लेकिन यह सब यीशु के बारे में है। आत्मा अपने बारे में नहीं बोलेगी बल्कि यीशु के बारे में बोलेगी इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ जॉन 7 में यीशु आत्मा का स्रोत है, न कि इसके विपरीत।

इसी तरह, शायद पॉल 1 कुरिन्थियों 12 की शिक्षा में, यह यीशु ही है जो चर्च का मुखिया है। वह शरीर का मुखिया है। वह अपने शरीर को दुनिया में विभिन्न तरीकों से अपना काम करने के लिए तैयार करने के लिए चर्च में आत्मा भेजता है। इसलिए इसे ध्यान में रखें और उस अंश के अनुवाद में उस संभावित छोटी सी उलझन के बारे में सोचें जो वास्तव में कह रही है कि जो यीशु के पास आता है और जो उस पर विश्वास करता है, वह यीशु के हृदय से निकला है, यह वही है यीशु के पास आना इस परिच्छेद में जोर दिया गया है। और आत्मा यीशु से हमारे पास आता है।

सिलोम के पूल के बारे में बात करते हुए यहां कुछ और छवियां हैं, आप में से जो लोग अतीत में इज़राइल गए हैं, उन्होंने एक जगह का दौरा किया है जहां उन्होंने आपको बताया था कि यह सिलोम का पूल था। हालाँकि, हाल ही में इस स्थान के रूप में एक अन्य साइट की पहचान की गई है। तो यह एक बहुत खराब तस्वीर है जब आप इसे उड़ाते हैं तो यहां पर्याप्त पिक्सेल नहीं हैं, लेकिन आप मंदिर की रूपरेखा देख सकते हैं और यहां निचले यरूशलेम के नीचे सबसे निचले क्षेत्र में शायद वह जगह है जहां मंदिर है, क्षमा करें, पूल सिलोम की पहचान पहले की गई थी। बाद में इसे वास्तव में एक अलग जगह पर दिखाया गया। यहाँ उसकी एक और अधिक विस्मयकारी तस्वीर है।

इसलिए, पुराने दिनों में यदि आप यरूशलेम जाते थे तो वे आपको इस पूल को सिलोम के पूल के रूप में दिखाते थे और पुराने नियम के स्थल जिसे हिजकिय्याह की सुरंग कहा जाता था, से भी जुड़ा हुआ था। हालाँकि, हाल ही में एक आधुनिक भवन परियोजना के लिए कुछ खुदाई करते समय दुर्घटनावश पास में एक और विशाल पूल की खोज हुई। एक तरह से जिसे अब संभवतः सिलोम के वास्तविक पूल के रूप में देखा जाता है, यहां इसकी एक प्रारंभिक तस्वीर है क्योंकि इसे पहली बार उजागर किया गया था। थोड़ी देर बाद उन्होंने यहां कुछ बोर्ड भर दिए जहां वास्तव में पत्थर गायब थे, और इसलिए आप पूल में नीचे की सीढ़ियां देख सकते हैं। पूल यहां कोने को 90 डिग्री से अधिक कोण पर समतल करता है, इसलिए हमारे पास एक प्रकार का समलम्बाकार आकार है। इसलिए, जब मैं 2014 में इज़राइल में था तो मैं यह तस्वीर और यहां उस तस्वीर की तस्वीर लेने में सक्षम था जो इसका वर्णन करता है।

यहाँ एक कलाकार है जिसने इसे इस तरह से देखने के बारे में सोचा था जब यह मूल रूप से बनाया गया था। सिलोआम का तालाब उस मार्ग से बंधा हुआ था जिसमें राजा हिजकिय्याह ने सुरंग बनाई थी और चाल में तालाब बनाया था। तो, हालाँकि यह उस समय इस पूल की ऐतिहासिक उत्पत्ति के लिए 2 राजाओं के अध्याय 20 से जुड़कर किया गया था।

किसी अन्य कलाकार की प्रस्तुति से यह कुछ इस तरह दिखता है। मुझे पूरा यकीन नहीं है कि जॉर्डन घाटी तक कभी कोई कटअवे था। मुझे यकीन नहीं है कि उस पर क्या कोण होगा, शायद यही वह तस्वीर होगी जो हाल के दिनों से हमारे पास इस कोने की होगी। और यदि आप दूसरी दिशा में देख रहे थे, तो शायद आप उस ओर देख रहे होंगे, इसे देखने का एक और तरीका यह है कि कुछ लड़के उस बेहद खूबसूरत पूल के किनारे पर खेल खेल रहे हैं।

इसलिए, अब जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं कि हमने जॉन के अध्याय 7 में क्या देखा है तो यह एक अध्याय है जो कोलाहल और असहमति और अराजकता से भरा है कि यीशु वास्तव में कौन है। तो शायद जब हम यूहन्ना 7 को देखते हैं तो असली सवाल यह है कि यह आदमी कौन है, यह साथी यीशु कौन है? खैर, अध्याय के आधार पर हम उनके बारे में राय और दृष्टिकोण की एक सूची बना सकते हैं। इसलिए, वह एक वांछित व्यक्ति है, नेता उसकी तलाश कर रहे हैं, उन्होंने एक गिरफ्तारी दल भेजा है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिससे उसके अपने भाइयों को कुछ समस्याएँ हैं और वे वास्तव में उससे सहमत नहीं हैं। वह एक ऐसा आदमी है जिससे दुनिया नफरत करती है। यूहन्ना 7 की आयत 7 में ऐसे लोग हैं जो विशेष रूप से यीशु से उसकी अपनी गवाही के कारण नफरत करते हैं।

तो, भीड़ के बीच सवाल यह है कि क्या वह एक अच्छा आदमी है या वह धोखेबाज है और, वैसे, वह इतना स्मार्ट कैसे दिखता है क्योंकि उसके पास ज्यादा शिक्षा नहीं है? हम उसे किसी भी ज्ञात रब्बी स्रोत से नहीं जोड़ सकते, कुछ तो यह भी कहेंगे कि वह एक राक्षस-ग्रस्त व्यक्ति है।

विपरीत छोर पर मौजूद अन्य लोग कहेंगे कि वह मसीहा है या फिर भी वह एक अस्पष्ट गैलीलियन व्यक्ति है। दूसरों ने कहा कि वह पैगम्बर है. अतः लोग यीशु के कारण विभाजित हो गये। क्या यह उसी तरह नहीं है जैसे हम आज भी इस बात पर विभाजित नहीं हैं कि यीशु कौन हैं?

उम्मीद है, हम सभी जो यहां वीडियो बना रहे हैं और देख रहे हैं और जॉन के सुसमाचार के बारे में सोच रहे हैं, उनकी राय होगी कि वह वास्तव में मसीहा है और हम वह जानकारी लेंगे जो जॉन हमें देते हैं और ऐसे लोग होंगे जो यीशु पर विश्वास करते हैं और जो उसके नाम के माध्यम से जीवन प्राप्त करते हैं।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 9 है, जेरूसलम में तनावपूर्ण समय, यह आदमी कौन है? यूहन्ना 7:1-52.